Bandi Mochan Mantra And Stotra

बन्दी मोचन मंत्र एवं स्तोत्रम्

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबन्दीमंत्रस्य भैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीबन्दीदेवता, भवबन्ध कारागार बन्धन मुक्तये जपे विनियोगः।

षडंगन्यास- ॐ हृदयाय नमः। ॐ हिलि शिरसे स्वाहा। ॐ हिलि शिखायै वषट्। ॐ बन्दी कवचाय हुम्। ॐ देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- सतोय पाथोद समान कान्तिं अम्भोज पीयूषकरी हस्ताम्। सुरांगना सेवित पाद पद्मां भजामि बन्दीं भवबन्ध मुक्तये।।

एकादशाक्षरमंत्र- 'ॐ हिलि हिलि बन्दी देव्यै नमः।'

अष्टादशाक्षरमंत्र- 'ऐं ह्रीं श्रीं बन्दी अमुक (व्यक्ति का नाम) वन्द्य मोक्षं कुरु-कुरु स्वाहा।'

नवाक्षरमंत्र- 'ॐ ह्रीं ह्रूं बन्दी देव्यै स्वाहा।' इस मंत्र के कण्व ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द, ह्रीं बीज, ह्रूं कीलक और बन्धनमुक्ति के लिये विनियोग किया जाता है।

यंत्रार्चनम्- षट्कोण अष्टदल भुपूर बनाकर प्रत्येक आवरण की पूजा करें:-

प्रथमावरणम्- (षट्कोणे)- ॐ हृदयाय नमः। ॐ हिलि शिरसे स्वाहा। ॐ हिलि शिखायै वषट्। ॐ बन्दी कवचाय हुम्। ॐ देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।

द्वितीयावरणम्- (अष्टदले पूर्वादि क्रमेण)- ॐ काल्यै नमः। ॐ तारायै नमः। ॐ भगवत्यै नमः। ॐ कुब्जायै नमः। ॐ शीतलायै नमः। ॐ त्रिपुरायै नमः। ॐ मातृकायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः।

तृतीयावरणम्- (भुपूरे दश दिक्षु पूर्वादि क्रमेण)- ॐ इन्द्राय नमः। ॐ आग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ईशान एवं पूर्व मध्ये- ॐ ब्रह्मणे नमः। नैर्ऋत्य पश्चिम मध्ये- ॐ अनन्ताय नमः।

चतुर्थावरणम्- (भुपूरे इन्द्रादि लोकपाल समीपे)- ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डायै नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः। इसके उपरान्त् यंत्र मध्य में देवी का पूजन कर जपारम्भ करे।

संक्षिप्त विधि- दुर्भाग्यवश कारागार, जेल अथवा किसी दुष्ट व्यक्ति के बंधन में कोई अपना सम्बन्धी कैद हो तो ऐसी विकट परिस्थिति में उसकी मुक्ति हेतु बन्दी देवी की मंत्रोपासना करनी चाहिये। इसके प्रभाव से बंधन या जेल से कैदी को मुक्ति मिलती है। बन्दी देवी यंत्र अथवा भगवती दुर्गा के समक्ष इस दिव्यमंत्र का जप किया जा सकता है। विधिवत् पांच लाख जप कम से कम होम सहित करने चाहिये (लघु मंत्र है इसलिये)। मंत्र जप के साथ नित्य स्तोत्र के 11 पाठ करें और प्रसादरूप में भगवती को खीर एवं मालपुए का भोग लगाना चाहिये। जो व्यक्ति स्वयं अनुष्ठान करने की पर्याप्त विधि न जानते हों या समय का अभाव हो या अनुष्ठान के अभ्यासी न हो तो ऐसी परिस्थिति में योग्य विद्वान या गुरु से भी यह अनुष्ठान करवा सकते हैं। स्वयं कैदी भी किसी कैद से मुक्ति हेतु मानसिक रूप से इस मंत्र का जप कर सकता है। कैद पक्षियों को पिंजरे से मुक्त कराना धर्मार्थ कर्म है, इस शुभ कर्म के सम्पादन से कैदी को मुक्ति के लिये शीघ्र ही दैवीय सहायता मिलती है।

बन्दीमोचन स्तोत्रम्- बन्दीं देवीं नमस्कृत्य वरदाभयशोभिताम्।
तदग्र्यां शरणं गच्छे शीघ्रं मोक्षं ददातु मे।1।

बन्दी कमलपत्राक्षी लोहश्रृंखलभंजिनी। प्रसादं कुरु मे देवि शीघ्रं मोक्षं ददातु मे।2।

त्वं बन्दी त्वं महामाया त्वं दुर्गा त्वं सरस्वती। त्वं देवी रजनी चैव शीघ्रं मोक्षं ददातु मे।3।

संसारतारिणी बन्दी सर्वकामप्रदायिनी। सर्वलोकेश्वरी देवी शीघ्रं मोक्षं ददातु मे।4।

त्वं ह्रीस्त्वमीश्वरी देवी ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी। त्वं वै कल्पक्षयं कर्त्री शीघ्रं मोक्षं ददातु मे।5।

देवी धात्री धरित्री च धर्मशास्त्रार्थभाषिणी। दुःश्वाम्बरागिणी देवी शीघ्रं मोक्षं ददातु मे।6।

नमोऽस्तु ते महालक्ष्मि रत्नकुण्डलभूषिते। शिवस्यार्धांगिनी चैव शीघ्रं मोक्षं ददातु मे।7।

नमस्कृत्य महादुर्गां भयादुत्तारिणीं शिवाम्। महादुःखहरां चैव शीघ्रं मोक्षं ददातु मे।8।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं यः पठेन्नित्यमेव च। सर्वबन्धविनिर्मुक्तो मोक्षं च लभते क्षणात्।9।

जैसा कि अधिकांश लोग सुख में भगवान् की कोई विशेष पूजा जपादि नहीं करते, केवल संकटकाल में ही ईश्वर की मंत्रोपासना करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को ईश्वरीय सहायता विलम्ब से मिलती है। अधिकतर मनुष्य संकटकाल से मुक्त होने के लिये अति व्याकुलता में एक साधनाकर्म को छोड़कर दूसरे और दूसरे को छोड़कर कई साधनाकर्मों का सम्पादन करते हैं। साधना पद्धति की यह स्थिति सर्वदा अनुचित है। इस जल्दबाजी से कष्ट कम नहीं होते, अपितु और अधिक बढ़ते ही हैं। इसके अतिरिक्त मनुष्य की मानसिक स्थिति भी भंग हो जाती है। हमारा कार्य केवल श्रद्धा और विश्वास से कर्म करने का है, फल देना केवल और केवल ईश्वर के ही आधीन है। ईश्वर को ही यह निश्चित करने दें कि आपके साधनाकर्म का फल आपको कब मिलेगा। अभी तक किसी गुरु या विद्वान के पास यह शक्ति नहीं है जो कि ईश्वर को शीघ्र फल देने के लिये विवश कर सके। सभी लोगों का भाग्य भिन्न-भिन्न होता है। दुर्भाग्य साधारण स्तर का हो तो साधना के माध्यम से शीघ्र कार्य सम्पन्न हो जाता है परंतु दुर्भाग्य अत्यन्त प्रबल हो तो पाप-श्राप स्वाहा करने के लिये कई अनुष्ठान भी करने पड़ते हैं। मान लिजिये कि आप किसी संकट से मुक्ति हेतु किसी मंत्र की 11 माला नित्य

करते हैं तो भी संकट का निवारण नहीं हो रहा है तो अपनी जप माला की संख्या 21 या 31 कर दें, परंतु मंत्र या देवता को लेकर कोई संशय न करें और साधना सम्बन्धी सम्पूर्ण विधि का भी पालन करें। मेरा साधकजन से अनुरोध है कि एक ही देवता की उपासना में उत्साहपूर्वक लीन रहें। इसी में साधक का परम कल्याण है। मेरे मंत्र, देवता और गुरु से श्रेष्ठ कोई नहीं है और मेरा मंत्र अवश्य फलीभूत होगा इसी दिव्य विचारधारा से मंत्र साधना करें। इसके साथ नित्य दैनिक कर्मों का भी धर्मपूर्वक सम्पादन करें। एक तरफ मंत्रसाधना रूपी शुभ कर्म और दूसरी तरफ अनैतिक कार्यों को करने से ईश्वर को असमंजस में न डालें।

'मार्कण्डेयपुराण' में ब्रह्माजी ने दुःसह को धर्म सम्बन्धित जो उपदेश दिये थे उनका विवरण इस प्रकार है- ब्रह्माजी ने कहा- बेटा! मनुष्यों का घर तुम्हारा निवास स्थान है, अधर्मपरायण पुरुष तुम्हारे बल हैं तथा नित्यकर्म के त्याग करने वालों से तुम्हारी पुष्टि होगी। मर्म-व्रण और फोड़े तुम्हारे वस्त्र होंगे। अब तुम्हारे आहार की व्यवस्था करता हूं।

जिसमें किसी प्रकार की क्षति पहुंची हो, कीड़े पड़ गये हो, कुत्तों ने दृष्टि डाली हो, जिसे मुंह से फूंक-फूंककर ठंडा किया गया हो, जो जूंठा और अपक्व हो, जिसको किसी ने चख लिया हो,

जो शुद्धतापूर्वक तैयार न किया गया हो, जिसने फटे आसनों पर बैठकर भोजन किया हो, जो अपने समीपवर्ती को नहीं दिया गया हो, विपरित दिशा अथवा कोण की ओर मुंह करके खाया गया हो, दोनों संध्याओं के समय और नाच, बाजा एवं स्वर-ताल के साथ जिसको खाया गया हो, जिसे रजस्वला स्त्री के द्वारा लाया, खाया अथवा देखा गया हो तथा जो और किसी दोष से युक्त हो- ऐसा कोई भी खाने पीने का सामान तुम्हारी पुष्टि के लिये तुम्हें मैं देता हूं।

बिना श्रद्धा का हवन, बिना नहाये, बिना जल के, अवहेलनापूर्वक दिया हुआ दान, जो व्यर्थ पड़ी हो अथवा फेंक दी जाने वाली हो, ऐसी वस्तु का दान और अत्यन्त अभिमान से, दोष से, क्रोध से तथा कष्ट मानकर किया हुआ दान- इन सबका फल तुम्हें ही मिलेगा।

जो कार्य केवल धन कमाने के लिये किया जाता है, धर्म की दृष्टि से नहीं तथा जो सत्य की अवेहलनापूर्वक अध्ययन किया जाता है, वह सब तुम्हारी इच्छापूर्ति के लिये तुम्हें दे रहा हूं।

जो मनुष्य गर्भिणी स्त्री के साथ समागम करते, संध्या और नित्यकर्म का उल्लंघन करते तथा असत्-शास्त्रों के अनुसार कार्य या उनकी चर्चा करके दूषित होते हैं, ऐसे मनुष्यों को दबाने की तुममे पूरी शक्ति होगी।

जहां एक ही पंक्ति में दो प्रकार का भोजन परोसा जाता हो, अतिथि सत्कार और बलिवैश्वदेव का उद्देश्य न रखकर केवल

अपने लिये भोजन बनाया जाता हो, भोजन में भेद रखा जाता हो अर्थात् किसी के लिये अच्छा और किसी के लिये खराब भोजन बनता हो और जहां घर में रोज-रोज कलह होता हो, वहीं तुम्हारा निवास होगा।

जहां गाय-घोड़े आदि वाहन बिना खिलाये-पिलाये बांध दिये जाते हों और संध्या के पहले ही जिस घर को धो-बुहाकर साफ नहीं किया जाता हो, वहां रहने वाले मनुष्यों को तुमसे भय प्राप्त होगा।

जो मनुष्य बिना व्रत के ही भोजन करते, जूए और स्त्रियों में आसक्त रहते, दुःसह वचन बोलते और बिल्लियों की तरह ऊपर से साधु बनकर छिपे-छिपे अपना उल्लू सीधा करते हैं, वे सब तुम्हारे उपकारी है।

जो ब्रह्मचर्य के बिना ही अध्ययन और विद्वान् हुए बिना ही यज्ञ करते हैं, तपोवन रहकर भी ग्राम्य विषय-भोगों का सेवन करते और अपने मन को जीतने का यत्न नहीं करते तथा जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र अपने-अपने कर्म से भ्रष्ट होते हैं, ऐसे लोग परलोक की इच्छा से जो भी चेष्टा करते हैं, उसका सारा फल तुम्हीं को मिलेगा।

यक्ष्मन्! जो लोग बलिवैश्वदेव के अन्त में तुम्हारे नाम के उच्चारणपूर्वक तुम्हें बलि अर्पण करते हैं और 'यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः' कहकर उसे त्यागते हैं, जो शुद्धतापूर्वक बना हुआ अन्न विधिपूर्वक भोजन करते, बाहर-भीतर से पवित्र रहते, लोलुपता

नहीं रखते और स्त्रियों के वशीभूत नहीं होते, ऐसे मनुष्यों के घरों को तुम त्याग देना।

जहां हविष्य से देवताओं की और श्राद्ध से पितरों की पूजा होती हो तथा कुल की स्त्रियों, बहनों और अतिथियों का सत्कार होता हो, उस घर को भी छोड़ देना।

जहां बालक, वृद्ध, स्त्री-पुरुष तथा परिवार में प्रेम हो, जहां की स्त्रियां आनन्दपूर्वक रहती हों, बाहर जाने के लिये उत्सुक नहीं होती तथा लज्जा की रक्षा करती हों, उस घर पर दृष्टि न डालना।

जहां अवस्था और सम्बन्ध के अनुसार शयन, आसन और भोजन की व्यवस्था हो, जहां के निवासी दयालु, सत्कर्मपरायण और साधारण सामग्री से युक्त हों तथा जिस घर के लोग गुरु, वृद्ध एवं ब्राह्मणों के खड़े रहने पर स्वयं भी आसन पर नहीं बैठते, वह घर भी तुम्हें छोड़ देना चाहिये।

देवता, पितर, मनुष्य और अतिथियों के भोजन से बचा हुआ अन्न ही जिसका भोजन है, उस पुरुष के घर में भी तुम पैर न रखना।

जो सत्यवादी, क्षमाशील, अहिंसक, दूसरों को पीड़ा न देने वाले तथा दोषदृष्टि से रहित हों, ऐसे पुरुषों को तुम छोड़ देना।

जो अपने पति की सेवा में सलंग्न रहती, दुष्टा स्त्रियों का साथ नहीं करती तथा कुटुम्ब के लोगों एवं पति के भोजन करने से

बचे हुए अन्न को ही खाकर अपने शरीर का पोषण करती हैं, ऐसी स्त्री को भी तुम हाथ न लगाना।

जो सदा यज्ञ, अध्ययन, वेदाभ्यास और दान में मन लगाता है, यज्ञ कराने, शास्त्र पढ़ाने तथा उत्तम दान ग्रहण करने से ही जिसकी जीविका चलती हो, ऐसे ब्राह्मण को भी तुम त्याग देना।

दुःसह! जो सदा दान, अध्ययन और यज्ञ के लिये उद्यत रहता और अपने लिये उत्तम एवं विशुद्ध शास्त्रग्रहण की वृत्ति से जीविका चलाता हो, उस क्षत्रिय के पास भी तुम न जाना।

जो दान, अध्ययन और यज्ञ- इन तीन पूर्वोक्त गुणों से युक्त हो और पशुपालन, व्यापार एवं कृषि से जीविका चलाता हो, ऐसे पापरहित वैश्य को भी त्याग देना।

जो दान, यज्ञ और द्विजों की सेवा में तत्पर रहता और विशुद्ध ब्राह्मण आदि की सेवा से ही जीवन निर्वाह करता हो- ऐसे शूद्र का भी त्याग कर देना।

जहां गृहस्थ पुरुष श्रुति-स्मृति के अनुकूल उपाय से जीविका चलाता हो, उसकी पत्नी उसी की अनुगामिनी हो, पुत्र, गुरु, देवता और पिता का पूजन करता हो तथा पत्नी भी पति की पूजा में सलंग्न रहती हो, वहां अलक्ष्मी का भय कैसे हो सकता है।

जो स्थान प्रतिदिन संध्या के समय पानी से धोया जाता और स्थान-स्थान पर फूलों से पूजित होता है, उस घर की ओर तुम आंख उठाकर देख भी नहीं सकते।

जहां लोग सूर्योदय से पूर्व ही सोकर उठ जाते हों, जहां प्रतिदिन अग्नि और जल प्रस्तुत रहता हो, सूर्योदय होने तक दीप जलता एवं सूर्य का पूर्ण प्रकाश पहुंचता हो, वह घर लक्ष्मी का निवास स्थान है। जहां चन्दन, वीणा, दर्पण, मधु, घृत, ब्राह्मण तथा तांबे के पात्र हों, उस घर में तुम्हारे लिये स्थान नहीं है।

जहां पके या कच्चे अन्नों का अनादर और शास्त्रों की आज्ञा का उल्लंघन होता हो, उस घर में तुम इच्छानुसार विचरण करो।

जिस घर में मनुष्य की हड्डी हो और एक दिन तथा एक रात मुर्दा पड़ा रहा हो, उसमें तुम्हारा अन्य राक्षसों का भी निवास रहे।

जो अपने भाई-बंधुओं को तथा सपिण्ड एवं समानोदक मनुष्यों को अन्न और जल दिये बिना ही भोजन करते हैं, उस समय उन लोगों पर तुम आक्रमण करो।

जहां लोग अपने घर पर प्रसिद्ध उत्सव मनाते हों, ऐसे घरों में न जाना।

जो पुरुष देशाचार, प्रतिज्ञा, कुलधर्म, जप, होम, मंगल, देवयज्ञ, उत्तम शौच तथा लोक प्रचलित धर्मों का भली-भांति पालन करता हो, उसके संसर्ग में तुम्हें नहीं जाना चाहिये। दुःसह से

ऐसी बात कहकर ब्रह्माजी वहीं अन्तर्धान हो गये। फिर उसने भी ब्रह्माजी की आज्ञा का उसी प्रकार पालन किया। लिंगपुराण में अशुभ ज्येष्ठा अलक्ष्मी को दुःसह मुनि की पत्नी कहा गया है।

पाप कर्मों द्वारा रोगों की उत्पत्ति एवं उनका निवारण- कोई बालक जन्म से ही मनमोहक छवि लेकर जन्म लेता है तो कोई कुरूप काया के साथ, कोई राजघराने में पैदा होता है तो कोई निर्धन परिवार में। इसे ही प्रकृति का कर्मबन्धन कहा जाता हैं। पूर्व जन्मों में किये गये पाप-पुण्यों के आधार पर ही जीव को दुःख या सुखरूपी ऋतुओं को स्वीकार करना पडता है। दीर्घकालीन या गम्भीर रोगों की उत्पत्ति भी पूर्व जन्मों के पापकर्मों से होती हैं; जिनका उल्लेख हमारे शास्त्रों में है। कुछ पाप-कर्मों का निवारण दैवीय मंत्र-जप से सम्भव है, परन्तु कुछ भयानक पाप-कर्मों का मूल्य मनुष्य को भोगकर ही चुकाना पड़ता है। फिर भी देव-आराधना के साथ दानादि कर्मों का

सम्पादन करने से महाव्याधियों को कुछ सीमा तक शान्त अवश्य किया जा सकता है। जैसेः-

क्षयरोग- यह रोग तेल, घी तथा चिकनी वस्तु के चुराने के कारण होता है। त्वचा में पड़ने वाले चकत्ते भी इसी पाप से होते हैं। इसके अलावा इसके कुप्रभाव से कर्ता को पतित योनियों का भोग भी भोगना पड़ता है।- गौतमस्मृति।

मृगी- गुरु की ताड़ना करने पर उसे मारने वाला कुशिष्य अगले जन्म में मृगी का रोगी होता है तथा संकल्पपूर्वक गोदान करने से उसकी शान्ति होती है।

जन्मान्ध- गोवध करने वाला जन्म से अंधा होता है।- गौतमस्मृति।

मधुमेह- शास्त्रानुसार अनियमित एवं स्वच्छन्द यौनाचार करने से यह रोग होता है।

अजीर्णरोग- भोजन में विघ्न करने वाले को अजीर्ण रोग हो जाता है। गायत्रीमंत्र द्वारा एक लाख होम करने से इसकी शान्ति होती है।

श्वास-कास- पीठ पीछे निन्दा करने वाले नरक भोगने के बाद श्वास रोग को भोगते हैं।

शूलरोग– दूसरों को दुःख देने वाला शूलरोगी होता है। अन्नदान और रुद्रजप करने से शान्ति मिलती है।

रक्तातिसार रोग– यह रोग वन में आग लगाने वाले को होता है। प्रायश्चित के लिये पानी का प्याऊ लगाना चाहिये।

भगन्दर, बवासीर– ये दुःख देवमन्दिर में या पुण्यजल में एक बार भी मूत्र या विष्ठा करने से होता है।

लकवा– सभा में पक्षपात करने वाले को पक्षाघात होता है। इस रोग वाले को प्रायश्चित के लिये पवित्र ब्राह्मण को बारह भर (तोला) स्वर्णदान देना चाहिये।

नेत्ररोग– नेत्ररोग रांगा चुराने वाले को होता है। वह एक दिन उपवास करके चार सौ भर (तोला) रांगा दान करे। मधु चुराने वाले को भी नेत्ररोग होता है, वह मधुदान करे।

खुजली– यह रोग तेल चुराने से होता है। इसके प्रायश्चित के लिये एक दिन उपवास करके दो घड़े तेल दान करना चाहिये।

पथरी– यह रोग सौतेली माता से गमन करने से होता है। इसकी शान्ति के लिये मधुधेनु और सौ द्रोण तिल दान करे।

कुबड़ा– पापी व्यक्ति अगम्यागमन से दूसरे जन्म में कुबड़ा होता है। वह काले मृगचर्म का दान करे।

प्रमेहरोग– यह रोग तपस्विनी के साथ गमन करने से होता है। इसके प्रायश्चित के लिये एक मास तक रुद्राष्टाध्यायी का पाठ तथा स्वर्ण दान करना चाहिये।

हृदयव्रणी– यह रोग अपनी गोत्र जाति की स्त्री से गमन करने से उपन्न होता है। दो प्राजापत्यव्रत करने से हृदयरोग में लाभ होता है।

जिह्वारोग– यह रोग पका हुआ अन्न चुराने से होता है। इसकी शान्ति के लिये एक लाख गायत्री जप एवं होमादि करे।

गूंगा– विद्या की पुस्तक चुराने वाला गूंगा होता है। न्याय और इतिहास की पुस्तक दान करनी चाहिये।

आधासीसी– यह रोग औषधि चुराने से होता है। शान्ति के लिये सूर्य को अर्घ्य दे और एक माशा सोना दान करे।

अंगुलि में घाव– यह रोग फल चुराने से होता है। इसकी शान्ति के लिये दस हजार फल दान करे।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana